पूर्णा अग्रवाल

सफल प्रेम विवाह

वर्तमान परिवेश में युवक युवती किन्ही भी कारणों से एक दूसरे के संपर्क में आते हैं और कुछ ही मुलाकात में आपसी सहमति से विवाह का निर्णय ले लेते हैं। यह निर्णय परस्पर आकर्षण अथवा सौहार्दपूर्ण मैत्री अथवा किसी प्रकार के दबाव के तहत लिया गया निर्णय भी हो सकता है। असल में तो यह प्रारब्ध होता है और उस प्रारब्ध का भोग भोगने के लिए ही यह ऋण-अनुबंधन होता है। कई प्रेम विवाह अक्सर टूटते भी देखे गए हैं और कई प्रेम विवाह लंबी उम्र पार कर गए हैं।

सफल प्रेम विवाह के ज्योतिषीय योग

साहित्यिक संदर्भ

प्राचीन काल में ऋषि–मुनियों द्वारा इस प्रकार के प्रेम विवाह के कोई योग सूत्र पर विशेष सूत्र प्रतिपादित नहीं किए गए हैं लेकिन ज्योतिष देश–काल–पात्र पर निर्भर करता है और वर्तमान परिवेश में इस पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है। कई कुंडलियों पर अध्ययन करने के पश्चात कुछ एक ऐसे पॉइंट निष्कर्ष में मिला है जो कि सफल प्रेम विवाह को दर्शाते हैं–

प्रेम विवाह के कारक ग्रह

प्रेम विवाह के कारक ग्रहों में

बली शुक्र – प्रेम, आकर्षण, मधुरता, स्पार्क

बली चंद्र – मन, भावनाओं का मुख्य कारक ग्रह

गुरु – विवेकवान, क्षमावान, सहिष्णुता

बुध– त्वरित निर्णय क्षमता, स्थिरता, तार्किकता

प्रेम विवाह के प्रमुख भाव

प्रथम भाव – लग्न स्वयं जातक

चतुर्थ भाव – घर का सुख, भावनाओं का केंद्र, धोखे का स्थान।

पंचम भाव– प्रेम की भावनाओं का, बुद्धि कौशल का, मनोरंजन का

सप्तम भाव – दांपत्य विचार

एकादश भाव – इच्छापूर्ति भाव

सफल प्रेम विवाह के प्रमुख सूत्र

1. लग्नेश का पंचम भावस्थ होना या पंचमेश के साथ युति।

2. पंचमेश का लग्नगत होना।

3. लग्नेश यदि पंचम में स्थित होगा तो जातक को प्रेमी या प्रेमिका प्रपोज करेगा

4. चतुर्थ भाव घर का सुख भाव है वह पापाक्रांत नहीं होना चाहिए।

5. सप्तम भाव पर राहु शनि की दृष्टि हो या सप्तमेश राहु शनि से युक्त हो अथवा लग्न लग्नेश राहु दृष्ट हो तब भी प्रेम विवाह के योग बनते हैं।

6. पंचमेश सप्तमेश की युति 11 अथवा नवम भाव में हो तब भी प्रेम विवाह होता है।

7. पंचमेश का संबंध 1 4 6 8 12 से बने तब प्रेम में धोखा या प्रेम विवाह टूटने के योग बनते हैं।

8. सप्तमेश शुक्र मंगल के प्रभाव में हो तथा यह योग दोनों की ही पत्रिका में पाया जाए तो यह एक उत्तम योग सफल प्रेम विवाह के लिए माना जाता है।

9. पंचमेश यदि अष्टम या अष्टमेश से संबंध बनाएं तब मात्र शारीरिक आकर्षण पाया जाता है।

10. गुरु शुभ कर्तरी में पंचमेश लग्नेश सप्तमेश पापाक्रांत न हो, षडाष्टक योग न हो।

11. नवांश कुंडली में भी यह केंद्र त्रिकोण में अथवा एकादश भाव में स्थित हो, शुक्र एवं चंद्र बली अवस्था में होकर संबंध बनाते हों तब पूर्ण सफल प्रेम विवाह के योग बनते हैं।

उदाहरण

19–1–1994, 19:18, ग्वालियर

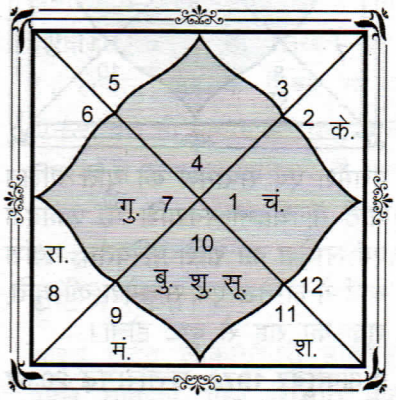

इस चार्ट में चतुर्थ भाव शुभ स्थिति में है। पंचम नवम का संबंध, राहु का लग्न, पंचम नवम से संबंध है।

नवांश में लग्नेश और पंचमेश का त्रिकोण संबंध, गुरु की केंद्रीय

स्थिति, नवांश में राहु सप्तमस्थ जोकि अंतर्जातीय विवाह की पुष्टि करता है।

20 अक्टूबर 1972, 9:02 प्रातः, दिल्ली

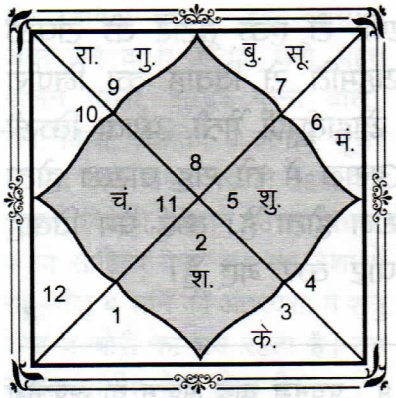

शुक्र चंद्र का संबंध, चतुर्थ भाव शुभ स्थिति में, पंचम–सप्तम का संबंध, नवांश में लग्नेश पंचमेश की युति एकादश भाव में, राहु का पंचमेश से युक्त होना, नवांश चार्ट में लग्नेश एवं पंचमेश का एकादश में स्थित होना।

30 अप्रैल 1974 होशियारपुर 9:30

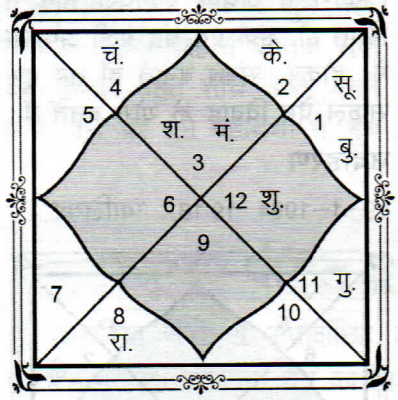

पंचमेश एवं सप्तमेश की युति चलित चार्ट में, चंद्रमा स्वराशि में, एकादश एवं लग्नेश का राशि परिवर्तन, नवांश चार्ट में लग्नेश एवं सप्तमेश की युति, शुक्र का राहु से दृष्ट होना।

9 अक्तूबर 1978, छत्तीसगढ़ 20:57

पंचमस्थ राहु, विवाह कारक शुक्र मंगल संयुक्त, गुरु का उच्च का होना, नवांश चार्ट में पंचमेश एवं सप्तमेश का केंद्र संबंध, एकादशेश का एकादश पर दृष्टिपात करना, लग्नेश एवं

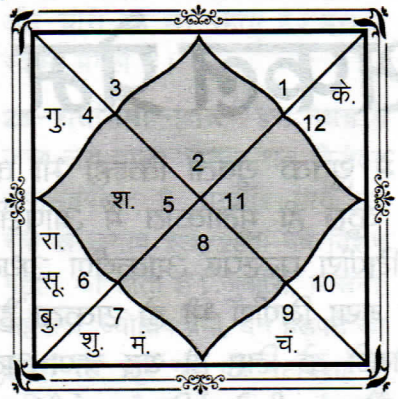

सप्तमेश की युति।

प्रेम विवाह में सफल होने के उपाय–

1. शुक्रवार को नहा धोकर राधा–कृष्ण के मंदिर में या राधा–कृष्ण के चित्र के सामने बैठकर गुलाब का फूल अर्पित करें एवं मधुराष्टकम् का पाठ करें।

2. शुक्रवार को खट्टी चीजें नहीं खानी चाहिए।

3. दुर्गा सप्तशती का मंत्र–

शरणागत दीनतं परित्राण परायणे

सर्वशक्ति हरे देवि नारायणी नमोस्तुते

दुर्गा देवी के चित्र के आगे एक लकड़ी का बाजू बट रखकर लाल कपड़ा बिछाकर 200 ग्राम अक्षत कुमकुम से मिश्रित कर रखें। एक देसी घी का दीपक जलाएं। दीपक की लौ पर ध्यान केंद्रित करते हुए उक्त मंत्र का 108 बार जप करें। यह मंत्र जाप प्रति सप्ताह मंगलवार को करें। जप उपरांत चावल को बाहर चबूतरे पर फैला दें।

4. राधा कृतं स्तोत्र–

गोलोक नाथ! गोपीश! मदीश! प्राण वल्लभ !

हे दीनबंधो ! दिनेश ! सर्वेश्वर! नमोस्तुते !

गोपेश ! गो समूहेश! यशोदा नंद वर्धन!

नंद आत्मज! सदानंद ! नित्यानंद नमोस्तुते !

शतमन्योरमन्युभग्न! ब्रह्म दर्प विनाशक!

कालीय दमन ! प्राणनाथ! कृष्ण नमोस्तुते !

शिवान्तैश! ब्रह्मेश! ब्रह्मोश! परात्पर!

ब्रह्म स्वरूप ! ब्रह्मज्ञ! ब्रह्म बीज नमोस्तुते!

चराचरतरो बीज ! गुणातीत ! गुणात्मक !

गुणबीज ! गुणाधार ! गुणेश्वर! नमोस्तुते !

अणिमादिक् ! सिद्धिश! सिद्धि स्वरूपक!

तपस्तपस्विस्तपसां !बीजरूपा! नमोस्तुते !

6. सफल दाम्पत्य के लिए स्त्री–पुरुष को श्री कृष्ण की शरण लेना चाहिए। युगल को भगवान के चरणों में नित्य घृत दीपक अर्पित कर उनसे माधुर्य पूर्ण दांपत्य जीवन गुजारने की प्रार्थना करनी चाहिए।

निष्कर्ष : उपरोक्त दिए हुए उदाहरणों में एवं दिए गए कॉमन पॉइंट्स में कई प्वाइंट्स पूर्णतः दिखाई दे रहे हैं। यह जो उदाहरण कुंडलियां दी गई है वह जातक आज प्रेम विवाह कर अपना दांपत्य सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। इस प्रकार शुक्र चंद्र का ऊर्जित अवस्था में होना गुरु का निर्बली अथवा पापाक्रांत न होना लग्नेश पंचमेश/सप्तमेश/नवमेश/एकादशेश की युति जातक के सफल प्रेम विवाह को दर्शाती है पर सप्तम भाव पर किसी प्रकार का कोई अशुभ प्रभाव दो या दो से अधिक ग्रहों का नहीं होना चाहिए।

पता : श्रीराम कॉलोनी, हरिशंकर पुरम, 3ठ साईं नगर, लश्कर ग्वालियर (म.प्र.)
78280 48273